तब मैंने अपनी जर्नी शुरु की....

आज आप यहाँ आये हैं। आज आप जो डिसिज़न लेंगे वो आपके आज और आगे का डिसाइड करेगा। जैसे आज आप यहाँ बैठे हैं एक दिन मैं वहाँ बैठी थी। बीस साल पुरानी बात है। सिर्फ फर्क ये है कि वो हॉल इतना बड़ा भी नहीं था। एक छोटा-सा हॉल था। और जैसे आप ऊषा दीदी और शीलू दीदी को रोज़ सुनते हैं मैंने तीन दिन आकर, वहाँ बैठकर उनको ही सुना बस। तब तक मुझे बहुत ज़्यादा समझ में भी नहीं आया था। लेकिन उन्होंने एक बात कही थी कि परमात्मा डायरेक्ट पढ़ाते हैं। मेरी माता जी ब्रह्माकुमारीज़ में आती थीं। वो मुझे हमेशा बतातीं कि भगवान पढ़ाते हैं, भगवान पढ़ाते हैं। तार्किक दिमाग को देखकर, वैज्ञानिक दिमाग, मैं प्रूफ(प्रमाण) चाहती थी। परमात्मा को प्रूव(साबित करना) नहीं किया जा सकता, आत्मा को प्रूव नहीं किया जा सकता। उनको सिर्फ महसूस किया जा सकता है। अब मेरी ज़िद्द शुरु होती है कि आप पहले प्रूव करो। तब तो मैं जर्नी(यात्रा) शुरु करूँ। वो कहने लगे कि आप जर्नी शुरु करो तो प्रूफ अपने आप सामने आ जायेगा। ऐसे कौन जर्नी शुरु करेगा जब तक आप प्रूफ नहीं करोगे कि आप जो कह रहे हैं वो राइट है।

इतनी सारी चीज़ें आपने बता दी हैं कि पहले आप सुबह चार बजे उठो और फिर रोज़ स्टडी भी करो। और फिर ऐसे चलो, ये करो ये नहीं करो, ये खाओ, ये नहीं खाओ। ये राइट है इतना सब करो तो फिर उसके बाद आप प्रूफ दोगे! कभी-कभी न अपनी ज़िद्द के कारण, अपने अहंकार के कारण हम अपना कभी-कभी क्या कर देते हैं? नुकसान कर देते हैं। फिर मुझे किसी ने एक बहुत सुन्दर बात बताई। किसी ने कहा कि आप मैथ स्टूडेंट हो तो फिर कहा कि अगर मैथ में कुछ प्रूफ करना पड़ता है तो कैसे शुरु करते हैं? फर्स्ट लाइन क्या लिखते हैं आप? ए इज़ इक्वल टू बी, और लास्ट लाइन क्या लिखते हैं देयर फॉर ए इज़ इक्वल टू

बी। और बीच में क्या होता है जर्नी ऑफ लाइफ। आप प्रूफ करके दिखाएं कि ए इज़ इक्वल टू बी बिफोर स्टार्टिंग लैट ए इज़ इक्वल टू बी। हमें ऐसे ही सिखाया है कि पहले अज़म्शन से स्टार्ट करना होता है फिर उसको प्रूफ करना होता है। और एंड में हम सॉल्यूशन पर आ जाते हैं। कहते बस वही करना है आप अज़म्शन से स्टार्ट करो कि गॉड इज़ यूअर(भगवान आपका है)। फिर ये भी बात राइट कि अज़म्शन से स्टार्ट करो।

फिर मैंने दूसरा क्वेशचन पूछा कि कितने दिन लगेंगे पहुंचने में! देयर फॉर ए इज़ इक्वल टू बी। वो बोले कि वो तो आप पर डिपेंड करता है ना कि आप बाकी पन्ने कितने प्यार से भरते हैं। कोई बहुत जल्दी पहुंच जाते हैं और किसी को टाइम लगता है। किसी को थोड़ा ज़्यादा टाइम लगता है। लेकिन जो राइट तरह से लिख रहा है तो वो ए इज़ इक्वल टू बी पर ज़रूर पहुंच जायेगा। मुझसे कभी-कभी कोई न कोई पूछता कि आप यहाँ क्यों आये हैं? उनको लगता कि मेरे जीवन में कुछ प्रॉब्लम आई होगी इसीलिए मैं यहाँ आई हूँ। तो वो मुझसे प्यार से पूछते कि आपके जीवन में क्या हुआ था? मैंने कहा कुछ भी नहीं। बोले कि आप इंजीनियरिंग कर रहे थे आपने उसको छोड़ दिया और आप यहाँ आ गये। तो कुछ तो ज़रूर हुआ होगा! ये हमारे बिलीफ सिस्टम है। एक हमारा बिलीफ सिस्टम है कि एक ये हमारा जीवन है और एक दूसरी जीवन है। आध्यात्मिकता एक अलग जीवन नहीं है। हमें लगता है कि एक ये लाइफ है फैमिली, रिश्ते, जॉब, प्रोफेशन और एक है स्प्रिचुअलिटी। क्या ये सच है? इसीलिए आध्यात्मिक जीवन कोई अलग नहीं है।

एक ग्रुप हमारे साथ आया उसमें एक भाई था 40-45 की एज के आसपास होगा। कहते मैंने अपने सीनियर को बोला कि सर मैं शुक्रवार, शनिवार और रविवार छुट्टी पर जा रहा हूँ। उन्होंने कहा कि ठीक है चले जाओ। कहते फिर मैंने सोचा कि मैं इनको बता तो दूँ कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। तो कहते मैंने उनको बताया कि सर मैं स्प्रिचुअल रिट्रीट के लिए माउण्ट आबू जा रहा हूँ। तो उनका फर्स्ट क्वेश्चन उसके बाद था कि ये थोड़ा जल्दी नहीं है? हम यही सोचते हैं? क्या हमने यह सोचा था कि यह जीवन का कौन-सा चरण है? सोचने की कला। सही सोचना, सही बोलना, सही व्यवहार करना और इमोशनली पॉवरफुल रहना ये जीवन की कौन-सी एज में शुरु करना चाहिए? उन्होंने बताया कि वो पहले से ही थोड़ा लेट हो गया। चालीस साल बीत गए जैसे उम्र बढ़ती है तो संस्कार थोड़े से कैसे होते जाते हैं, कड़क होते जाते हैं। और इगो थोड़ा-सा क्या होता जाता है? बढ़ता जाता है। लेकिन हमारी बॉडी, एज ये मतलब नहीं रखती है मेरे अपने संस्कारों को चेंज करने में। ये डिपेंड करता है हमारे दृढ़ निश्चय पर, मेरी इच्छा शक्ति पर। क्यों बदलना है, हम जानते हैं। कैसे चेंज करना है, हम जानते हैं। महत्वपूर्ण ये है कि हम चेंज होना चाहते हैं। चेंज होना चाहते हैं तो एक थॉट में चेंज हो जायेंगे। तो तब मैंने अपनी जर्नी शुरु की।

- क्रमशः

यह जीवन है

किसी को भी बुरा नहीं समझें, बुरा न चाहें और बुरा न करें। किसी को बुरा समझने से हम भी बुरे बन जाएंगे और हमारे में भी वो बुराई आ जाएगी। क्योंकि जब हम किसी को बुरा समझते हैं इसका मतलब हम अपने में बुराई को निमंत्रण देते हैं। जिससे उस बुराई के साथ हमारा भी सम्बन्ध जुड़ जाता है। इसलिए हमें कभी भी किसी की भी बुराई को नहीं देखना है। हमेशा सभी की अच्छाई को ही देखना है।
तभी हम अपने में अच्छाई को धारण कर पाएंगे। और जब हम सभी अपने जीवन में अच्छाई को धारण करेंगे तो सारा संसार अच्छा बन जाएगा अर्थात् सुखी बन जाएगा।

बड़ी पटन देवी कॉलोनी-पटना सिटी(बिहार)। नये भवन 'दिव्य प्रकाश' के उद्घाटन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए मेयर सीता साहू, ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह,सेक्रेट्री,मेडिकल विंग,ब्रह्माकुमारीज़, उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. रुक्मिणि दीदी, ब्र.कु. संगीता बहन, पटना सिटी उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रानी बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

रोहतक-शीला बायपास(हरियाणा)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मेयर मनमोहन गोयल, एलपीएस बोसार्ड के एमडी राजेश जैन, श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर स्वामी राघवेन्द्र जी महाराज आदि गणमान्य लोग शामिल रहे। अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रक्षा बहन।

हाथरस-उ.प्र.। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की जनपद प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. सीता दीदी, समाज सेविका किरन कपूर, समाजसेवी गौरीशंकर गौतम, एड. अतुल आंधीवाल, समाजसेवी अशोक कपूर, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका सादाबाद संचालिका ब्र.कु. भावना बहन,जलेसर से ब्र.कु. सुनीता बहन, माउण्ट आबू से ब्र.कु. सुरेश भाई, दाऊजी से ब्र.कु. सीमा बहन, केशवदेव बघेल एवं अन्य गणमान्य अतिथियों सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

चित्तौड़गढ़-राज.। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर शिव संदेश वाहन रैली को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. शिवली बहन, ब्र.कु. मीना बहन, ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. अनीता बहन, रेलवे सुरक्षा बल के सब इंस्पेक्टर जनक सिंह गुर्जर तथा नाथू लाल भाई।

अमेठी-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण के पश्चात् चेयरमैन श्रीमति चंद्रमा देवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमित्रा बहन व ब्र.कु. सुषमा बहन।

शमशाबाद-आगरा(उ.प्र.)। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर बीके पार्क में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी बहन। मंचासीन हैं डॉ. स्वाति पाठक, समाजसेवी अरुण चक, ब्र.कु. सुनील दीदी तथा अन्य भाई-बहनें।